शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 48 वां वर्ष

ई – पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 48 अंक – 7 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2023 सोमवार 13 – 20 फरवरी 2023 मूल्य पांच रूपए

जब वित्त वर्ष 2022-23 का घाटा ही 1064.35 करोड है तो प्रतिमाह इतना कर्ज क्यों?

- क्या सरकार शीर्ष अफसरशाही को समझ नहीं पा रही है
- क्या बजट दस्तावेज के साये में मुख्यमंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री स्थिति स्पष्ट करेंगे
- क्यों नहीं लाया जा रहा है श्वेत पत्र

शिमला/शैल। ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू की सरकार को बने अभी पूरे तीन माह नहीं हुए हैं। लेकिन भाजपा इस सरकार के खिलाफ लगातार आक्रामक होती जा

रही है। यह सही है कि भाजपा नेतृत्व केन्द्र से लेकर राज्य तक यह मानकर चल रहा था कि वह किसी भी तरह से सत्ता में पुन: वापसी कर ही लेगा। अधिकांश मीडिया आकलन भी यही संकेत दे रहे थे। शैल की तर्ज पर कम ही लोगों का आकलन था कि सत्ता परिवर्तन निश्चित है। ऐसे में यह स्वभाविक है कि सत्ता खोने का दंश काफी समय तक चुभता रहेगा। तीन माह का समय किसी भी सरकार को लेकर एक निश्चित राय बनाने के लिए पर्याप्त नहीं कहा जा सकता यह भी एक सच है। लेकिन इस तीन माह के समय में जो घटा है उसे भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। क्योंकि इसका असर पूरे कार्यकाल तक रहेगा। मोटे तौर पर यदि बात की जाये तो पूर्व की जयराम सरकार पर अत्यधिक कर्ज लेने का आरोप लगता आ रहा है और अब 75000 करोड़ के कर्ज और 11000 करोड़ की देनेदारियों के आंकड़े भी सामने आ चुके हैं। इन आंकड़ों के साये में शायद मुख्यमंत्री को यह कहने की नौबत आयी है कि प्रदेश के हालात कभी भी श्रीलंका जैसे हो सकते हैं। मुख्यमंत्री को इस ब्यान के साथ प्रदेश की वित्तीय स्थिति पर एक श्वेत पत्र जारी करके जनता के सामने सही स्थिति रखनी चाहिये थी। लेकिन ऐसा हो नहीं सका है। शायद जो अफसरशाही वित्तीय कुप्रबन्धन के लिये जिम्मेदार रही है वही आज प्रशासन के शीर्ष पर मौजूद है इसलिये उसने ऐसे प्रयास की राय नहीं दी होगी। इसलिये आज हर फैसले और उसके प्रभाव की जिम्मेदारी इस सरकार को लेनी पड़ेगी। अब तक यह सरकार 4500 करोड़ का कर्ज ले चुकी है। डीजल पर प्रति लीटर तीन रूपये वैट बढ़ाना पड़ा है। नगर निकाय क्षेत्रों में पानी के रेट बढ़ाने पड़े हैं। बिजली के दाम बढ़ाने की बात चल रही है। खाद्य तेल में दाम बढ़ चुके हैं। विधायक निधि की आखिरी किस्त जारी नहीं हो सकी है। हिमकेयर आदि स्वास्थ्य योजनाओं पर प्रभाव पड़ा है यह आरोप है भाजपा नेतृत्व के। लेकिन सरकार और कांग्रेस की ओर से इन आरोपों का कोई जवाब नही आ रहा है। यह आरोप उस समय गंभीर हो जाते हैं जब सरकार को इस तरह हर माह कर्ज लेना पड़े और उसका कोई जायज कारण भी जनता को न बताया जाये। क्योंकि इस बढ़ते कर्ज के कारण महंगाई और बेरोजगारी बढ़ती ही है। जो सत्ता परिवर्तन के बड़े कारण रहे हैं। इस सरकार को जनता को दी हुई गारंटीयां पूरी करनी है और इसके लिये पैसा चाहिये। राज्य सरकारों के पास अपनी आय बढ़ाने के साधनों में उत्पादन बढ़ाने, कर लगाने और कर्ज लेने के ही साधन रहते हैं। हिमाचल में सरकार के अपने क्षेत्र में कुछ बिजली उत्पादन हैं। लेकिन सरकार के स्वामित्व वाली योजनाएं रखरखाव के नाम पर जितना समय बन्द रहती है उसके कारण वह लगातार घाटे में चल रही हैं। सरकारी रिपोर्टों को यदि गंभीरता से देखा जाये तो इसमें बड़े घपले के संकेत मिलते हैं। विजिलैन्स में इस आश्य की आयी शिकायत की प्रारंभिक जांच में इसकी पुष्टि भी हो चुकी है लेकिन जांच को अन्जाम तक नहीं पहुंचाया गया है। शेष योजनाओं में 12% रॉयल्टी देने को ही सरकार बड़ी उपलब्धि मानती है। जबकि इन योजनाओं के ट्रांसमिशन की जिम्मेदारी सरकार की है और इसी ट्रांसमिशन में सारा घाटा हो जाता है। एक बड़ा खेल चल रहा है जिस पर कोई सरकार ध्यान देने को समझने को तैयार नहीं है। इससे भी हटकर यदि बजट दस्तावेजों पर नजर दौड़ा ली जाये तो बड़े सवाल खड़े हो जाते हैं। वर्ष 2020-21, 2021-22 और 2022-23 के दस्तावेज पर नजर डाले तो सामने आता है कि वर्ष 2020-21 में राजस्व घाटा 96.66% करोड़ था जो 2021-22 में 1462.94 करोड़ और 2022-23 में 3903.49 करोड़ हो गया। ऐसा क्यों हुआ इस पर कोई चर्चा नहीं हुई है। जबकि 2020-21 में राजस्व प्राप्तियां 33438.27 करोड़, 2021-22 में 37027.94 करोड़ और 2022-23 में 36375.31 करोड़ रह गयी क्योंकि केन्द्रीय प्राप्तियों में ही करीब दो हजार करोड़ कम मिले हैं। तय है कि जब जयराम को ही केन्द्र से यह पैसा नहीं मिला है तो सुक्खू को कहां से मिल जायेगा। यदि कुल राजस्व प्राप्तियों और पूंजीगत प्राप्तियों का जोड़ किया जाये तो सरकार को 48300.41 करोड़ मिले हैं। इसी तरह यदि कुल राजस्व व्यय और पूंजीगत व्यय का जोड़ किया जाये तो सरकार का कुल खर्च 49364.76 करोड़ होता है। इस तरह वर्ष के अन्त में केवल 1064.35 करोड़ का घाटा रह जाता है। इस बजट दस्तावेज से

यह सवाल उठना स्वभाविक है कि जब वर्ष में घाटा ही करीब एक हजार करोड़ का है तो सरकार को प्रतिमाह इतना कर्ज क्यों लेना पढ़ रहा है? इस पर मुख्यमंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री तथा सचिव वित्त को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिये। बजट का यह दस्तावेज पाठकों के सामने रखा जा रहा है ताकि आप भी इसे समझ सकें और सवाल उठा सकें।

तालिका–I

II. बजट को समझने के लिए मुख्य संकेतक

(₹ करोड़ों में)

		वास्तविक 2020–21	बजट अनुमान 2021–22	बजट अनुमान 2022–23
क.	राजस्व प्राप्तियां			
	(i) राज्य प्राप्तियां	10266.27	12035.87	13650.60
	(ii) केन्द्रीय प्राप्तियां (including Central Taxes) of which	19497.72	21223.08	19328.79
	(a) केन्द्रीय करों में हिस्सा	4753.92	5524.16	6778.19
	(b) केन्द्रीय हस्तांतरण	14743.80	15698.92	12550.60
	(iii) केन्द्रीय प्रायोजित स्कीमों के अंतर्गत अनुदान (excluding CSS Loans)	3674.29	3768.99	3395.92
	योग (राजस्व प्राप्तियां)	**33438.27**	**37027.94**	**36375.31**
ख.	राजस्व व्यय			
	राजस्व व्यय *of which*	33534.93	38490.88	40278.80
	केन्द्रीय प्रायोजित स्कीमें	*2213.11*	*2576.30*	*2609.04*
	योग राजस्व व्यय	**33534.93**	**38490.88**	**40278.80**
	निवल (राजस्व घाटा/ लाभ)*	**–96.66**	**–1462.94**	**–3903.49**
ग.	पूंजीगत प्राप्तियां			
	(i) सकल ऋण (excluding W&M / overdraft but includes net PF receipts)	9990.24	11080.51	11880.02
	(ii) ऋणों की वसूलियां	23.02	41.06	45.09
	(iii) विविध पूंजीगत प्राप्तियां	2.88	0.00	0.00
	योग (पूंजीगत प्राप्तियां)	**10016.14**	**11121.57**	**11925.10**
घ.	पूंजीगत व्यय			
	(i) ऋणों की अदायगियां	3396.57	3333.51	3342.02
	(ii) केन्द्रीय प्रायोजित स्कीमें	1751.78	1192.73	787.64
	(iii) अन्य	3877.55	5174.51	4956.30
	योग पूंजीगत व्यय	**9025.89**	**9700.75**	**9085.96**
	राजकोषीय अधिशेष/ घाटा*	**–5700.09**	**–7789.12**	**–9602.35**

*अधिशेष(+)/घाटा(-)

शिव प्रताप शुक्ल ने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल पद की शपथ ली

शिमला/शैल। शिव प्रताप शुक्ल ने राजभवन में आयोजित गरिमापूर्ण समारोह में हिमाचल प्रदेश के 29वें राज्यपाल के रूप में शपथ ली। हिमाचल

प्रदेश उच्च न्यायालय की कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सबीना ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। शिव प्रताप शुक्ल ने संस्कृत में शपथ ली।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू और लेडी गवर्नर जानकी शुक्ल भी उपस्थित थीं।

इस अवसर पर राज्यपाल को गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया।

मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने नियुक्ति पत्र पढ़कर सुनाया।

राज्यपाल के सचिव राजेश शर्मा ने प्रभार प्रमाण पत्र पर राज्यपाल के हस्ताक्षर प्राप्त किये।

इस अवसर पर उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री, हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया, नेता प्रतिपक्ष जय राम ठाकुर, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान, बागवानी मंत्री जगत सिंह नेगी, शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह, लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह, हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, मुख्य संसदीय सचिव, सांसद एवं प्रदेश कांग्रेस प्रभारी राजीव शुक्ला, सह-प्रभारी प्रदेश कांग्रेस तजिंदर सिंह बिट्टू, सांसद एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार सुनील शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (सूचना प्रौद्योगिकी एवं नवाचार) गोकुल बुटेल, विधायकगण, मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति पी.एस.राणा, राज्य सूचना आयुक्त आर. डी. धीमान, हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष रामेश्वर सिंह ठाकुर, पुलिस महानिदेशक संजय कुंडू, जीओसी-इन-सी (आरट्रेक) लेफ्टिनेंट जनरल एस.एस. महल, विभिन्न आयोगों के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष, बोर्डों और निगमों के अध्यक्ष और सदस्य, विश्वविद्यालयों के कुलपति, पुलिस और सिविल सेवा के वरिष्ठ अधिकारी तथा अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।

इसके उपरांत, मीडिया के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि राज्यपाल संविधान का एक उच्च पद है और वह राज्य सरकार के साथ समन्वय से कार्य करेंगे।

राज्यपाल ने शपथ लेने से पहले अपने परिवार के सदस्यों के साथ यज्ञ भी किया।

राज्यपाल ने रेडक्रॉस भवन का दौरा किया

शिमला/शैल। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने बार्नस कोर्ट स्थित रेडक्रॉस भवन का दौरा किया।

राज्यपाल राज्य रेडक्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष भी हैं।

इस अवसर पर लेडी गवर्नर जानकी शुक्ल भी उपस्थित थीं।

इस अवसर पर राज्यपाल ने रेडक्रॉस की गतिविधियों को और बढ़ाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा में रेडक्रॉस का सदैव ही बहुमूल्य योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि रेडक्रॉस की गतिविधियों से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ा जाना चाहिए ताकि ज़रूरतमंद और पात्र लोगों को सहायता प्रदान की जा सके।

इससे पहले, राज्यपाल के सचिव एवं राज्य रेडक्रास के महासचिव राजेश शर्मा ने राज्यपाल का स्वागत किया।

राज्य रेडक्रॉस अस्पताल कल्याण शाखा के अधिकारी और कर्मचारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने फोरलेन परियोजनाओं के कार्यों की समीक्षा की

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने लोक निर्माण विभाग तथा भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश में जारी राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं के कार्यों की समीक्षा की।

मुख्यमंत्री ने इन परियोजनाओं के लिए भू-अधिग्रहण के मुआवज़े से संबंधित मामलों का समयबद्ध निस्तारण करने के लिए संबंधित जिला

प्रशासनों को निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुआवज़ा राशि प्रदान करने में अनावश्यक देरी से लोगों को असुविधा का सामना करना पड़ता है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे इन सड़कों का निर्माण भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए करें और सुरंगों तथा पुलों के निर्माण पर विशेष ध्यान केन्द्रित करें। उन्होंने सुचारू यातायात संचालन के लिए इन मार्गों में तंग गलियारों व मोड़ों में सुधार के भी निर्देश दिए। उन्होंने प्राधिकरण को विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने तथा निविदा प्रक्रिया की समय सीमा घटाने के भी निर्देश दिए ताकि परियोजना का कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जा सके। उन्होंने कहा कि सड़कें हिमाचल प्रदेश के लोगों की जीवन रेखाएं हैं क्योंकि यहां रेल तथा हवाई संपर्क सीमित स्तर पर ही उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार यात्रियों को विश्व स्तरीय सड़क ढांचा उपलब्ध करवाने की दिशा में कार्य कर रही है और इससे राज्य में आने वाले पर्यटकों को भी सुविधा प्राप्त होगी।

मुख्यमंत्री ने शिमला-मटौर, कीरतपुर-नेरचौक और मण्डी-पठानकोट राष्ट्रीय राजमार्गों को फोरलेन मार्गों में स्तरोन्नत करने के कार्य को गति प्रदान करने के भी निर्देश दिए।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि ऊना जिला में बिढू से लठियाणी को जोड़ने के लिए गोविंद सागर झील पर 900 करोड़ रुपये अनुमानित लागत से एक पुल का निर्माण किया जाएगा जिसके लिए उन्होंने 25 फरवरी, 2023 तक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नालागढ़ से स्वारघाट फोरलेन के विस्तारीकरण पर 600 करोड़ रुपये, कालाअम्ब-पावंटा साहिब-देहरादून फोरलेन के विस्तारीकरण पर 1200 करोड़ रुपये, राष्ट्रीय राजमार्ग-503 अम्ब से ऊना और पंजाब सीमा से नादौन तक राष्ट्रीय राजमार्ग-03 के फोरलेन विस्तारीकरण पर 1500 करोड़ रुपये तथा ऊना बाईपास के निर्माण पर अनुमानित 500 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि 4700 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से प्रदेश में शीघ्र ही 178 किलोमीटर लंबी फोरलेनिंग परियोजनाओं का निर्माण किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि 750 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से जलोड़ी दर्रे पर एप्रोच रोड के साथ दो-लेन की सुरंग, 700 करोड़ रुपये की लागत से सैंज-लुहरी- जलोड़ी-बंजार-औट सड़क, 100 करोड़ रुपये की लागत से नाहन-सराहन-कुमारहट्टी सड़क पर नाहन शहर के लिए दो लेन की सुरंग, 700 करोड़ रुपये के परिव्यय से नाहन से कुमारहट्टी खंड-एनएच-907ए तक के दो लेन के सुधारीकरण तथा 300 करोड़ रुपये के परिव्यय से एनएच-154ए पंजाब सीमा से बनीखेत-चंबा-भरमौर सड़क के स्तरोन्नयन कार्य स्वीकृत भी हो चुके हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एफआरए और एफसीए मामलों की समयबद्ध स्वीकृति सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार ने संबंधित उपायुक्तों की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है तथा डीएफओ और यूज़र एजेंसी इसके सदस्य होंगे।

लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह, मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव भरत खेड़ा, प्रमुख अभियंता लोक निर्माण अजय गुप्ता, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के क्षेत्रीय अधिकारी अब्दुल बासित तथा मंडी, शिमला, पालमपुर और हमीरपुर के परियोजना निदेशक एवं संबंधित जिलों के उपायुक्त वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

शैल समाचार संपादक मण्डल

संपादक- बलदेव शर्मा

सयुक्त संपादकःजे.पी.भारद्वाज

विधि सलाहकार: ऋचा

अन्य सहयोगी

राजेश ठाकुर

अंजना

मुख्यमंत्री तथा उप-मुख्यमंत्री ने किरण बाली के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू तथा उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने पूर्व मंत्री स्व.जी.एस.बाली की धर्मपत्नी एवं हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष आर.एस.बाली की माता किरण बाली के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

मुख्यमंत्री ने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिजनों के प्रति सांत्वना व्यक्त करते हुए उन्हें इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

उप-मुख्यमंत्रे ने अपने शोक संदेश में शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

ग्रीन स्कूल प्रोग्राम के अंतर्गत हिमाचल को देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार

शिमला/शैल। विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र, नई दिल्ली द्वारा हिमाचल प्रदेश को ग्रीन स्कूल प्रोग्राम (जीएसपी) के अंतर्गत देश के सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार तथा जीएसपी गोल्ड पार्टनर अवार्ड के लिए चुना गया है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू के गतिशील नेतृत्व में प्रदेश ने यह उपलब्धि हासिल की है।

कार्यक्रम प्रभारी एवं सदस्य सचिव, हिमकोस्टे, ललित जैन, 21 फरवरी, 2023 को इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में राज्य से उच्चतम जीएसपी लेखा परीक्षण प्रस्तुतीकरण के लिए यह प्रतिष्ठित सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार और जीएसपी गोल्ड पार्टनर अवार्ड प्राप्त करेंगे। प्रदेश के सोलन जिला को बेस्ट जिला का पुरस्कार तथा चंबा की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला हिमगिरी को लैंड सैक्शन अवार्ड के लिए चुना गया है। प्रदेश के दो शिक्षकों को जीएसपी एंबेसडर पुरस्कार के लिए भी चुना गया है।

मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण के प्रति छात्रों को शिक्षित करने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसके लिए हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण परिषद् (हिमकोस्टे) को नोडल एजेंसी बनाया गया है। परिषद् द्वारा नेशनल ग्रीन कॉर्पस (एनजीसी) कार्यक्रम के तहत प्रदेश के 3000 विद्यालयों तथा 100 महाविद्यालयों में इको-क्लब स्थापित किए गए हैं। इको-क्लब कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जागृत करना है। वृहद शैक्षणिक दृष्टिकोण एवं अनुभवों के माध्यम से विद्यार्थियों में विषय की गहन समझ विकसित की जा रही है।

परिषद् द्वारा राज्य में पर्यावरणीय गतिविधियों को मज़बूत करने के लिए इन इको-क्लब को अभिनव पर्यावरणीय परियोजनाएं भी प्रदान की जा रही हैं। विद्यालयों में इको-क्लब द्वारा वर्षा जल संचयन (छत के ऊपर/पक्के क्षेत्र), विद्यालय परिसर में जड़ी-बूड़ी आधारित उद्यानों का विकास, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (कचरे से धन की अवधारणा), स्कूल परिसर के सौंदर्यीकरण तथा विज्ञान एवं पर्यावरण आदर्श प्रदर्शन प्रयोगशालाओं की स्थापना जैसी विभिन्न गतिविधियां करवाई जा रही हैं।

हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद द्वारा प्रदेश के 100 इको क्लब विद्यालयों में प्लास्टिक अपशिष्ट क्रय योजना भी लागू की गई है।

परिषद राज्य के इको-क्लब विद्यालयों के माध्यम से 'ग्रीन हिमाचल स्वच्छ हिमाचल' की अवधारणा के साथ 'एक पेड़ मेरे स्कूल के नाम' विषय पर प्रति वर्ष वृक्षारोपण अभियान भी चला रहा है। इस अभियान के माध्यम से वृहद स्तर पर पौधरोपण किया जाएगा और वर्तमान वित्त वर्ष में विभिन्न प्रजातियों के 26,106 पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा गया है। इनमें औषधीय पौधे, पुष्प, ईंधन और पशुचारे से संबंधित पौधे रोपित किए गए हैं। इसके अलावा परिषद् द्वारा राज्य के इको-क्लब विद्यालयों में रूफ टॉप सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना के माध्यम से ऊर्जा संरक्षण की अवधारणा का भी प्रचार किया जा रहा है। रूफ टॉप सौर ऊर्जा पावर प्लांट स्थापित करने के लिए 20 स्कूलों की पहचान की गई है।

प्रदेश सरकार ने अनाथ बच्चों को चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट के रूप में अपनाने का निर्णय लिया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में आयोजित प्रदेश मंत्रिमंडल की दूसरी बैठक में महत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री सुख – आश्रय योजना के दिशा – निर्देशों को स्वीकृति प्रदान की गयी।

मंत्रिमंडल ने राज्यपाल से हिमाचल प्रदेश विधानसभा का बजट सत्र 14 मार्च से 6 अप्रैल, 2023 तक आयोजित करने की सिफारिश भी की। बजट सत्र में 18 बैठकें होंगी।

मुख्यमंत्री सुख – आश्रय योजना

के अंतर्गत अनाथ और विशेष रूप से सक्षम बच्चों, निराश्रित महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों को लाया गया है, जिसमें उन्हें हर संभव सहायता का प्रावधान किया गया है। योजना में प्रदेश सरकार ने अनाथ बच्चों को अपने बच्चों (चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट) के रूप में अपनाया है।

मुख्यमंत्री सुख – आश्रय योजना के तहत मौजूदा अधोसंरचना के उन्नयन के साथ – साथ मौजूदा संस्थानों का युक्तिकरण कर उन्हें सुदृढ़ किया जाएगा ताकि आवासियों को बेहतर सुविधाएं प्राप्त हो सकें। उनके लिए अटैच शौचालय वाले कमरे, मनोरंजन व गतिविधि कक्ष, कॉमन रूम, म्यूजिक रूम, स्मार्ट क्लास रूम, कोचिंग रूम, इनडोर व आउटडोर खेल सुविधाओं सहित अन्य आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इस योजना के तहत उपेक्षित वरिष्ठ नागरिकों, अनाथ बच्चों, विशेष रूप से सक्षम बच्चों और निराश्रित महिलाओं की बेहतर देखभाल के लिए नए एकीकृत घरों का निर्माण चरणबद्ध तरीके से एक परिसर में अलग – अलग खण्डों में किया जाएगा। इनमें सभी आधुनिक सुविधाओं का समावेश होगा। यह आधुनिक एकीकृत घर जिला कांगड़ा के ज्वालामुखी तथा जिला मंडी के सुंदरनगर में स्थापित होंगे।

योजना के अंतर्गत संस्थान में रहने वाले बच्चों की गुणात्मक शिक्षा का प्रावधान किया गया है ताकि उन्हें बेहतर कोचिंग, संदर्भ पुस्तकें अथवा कोचिंग सामग्री मिल सके। समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के माध्यम से ऐसे बच्चों को मेंटरशिप भी प्रदान की जाएगी। दसवीं से बाहरवीं तक के बच्चों को सूचीबद्ध एजेंसियों के माध्यम से करियर काउंसलिंग भी प्रदान की जाएगी। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा के लिए भी इन बच्चों को सरकार सहायता प्रदान करेगी। इसके अलावा इन बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए मासिक पिकनिक आयोजित करने का भी प्रावधान किया गया है।

मुख्यमंत्री सुख – आश्रय योजना के तहत 18 वर्ष से अधिक आयु के पात्र आवासियों को कोचिंग, छात्रावास शुल्क, शिक्षण शुल्क आदि के लिए प्रति व्यक्ति एक लाख रुपए प्रति वर्ष प्रदान करने के अलावा कोचिंग की अवधि के दौरान चार हजार रुपए प्रति आवासी प्रति माह छात्रवृत्ति प्रदान करने का प्रावधान किया गया है।

मुख्यमंत्री सुख – आश्रय योजना में इन संस्थानों के आवासियों को विवाह के लिए दो लाख रुपए अथवा वास्तविक खर्च, जो भी कम हो, प्रदान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त इन संस्थानों में रहने वाले प्रत्येक बच्चे, निराश्रित महिलाओं का आवर्ती जमा खाता खोला जाएगा, जिसमें सरकार द्वारा 0 – 14 वर्ष की आयु के बच्चों को एक हजार रुपए प्रति बच्चा प्रति माह, 15 – 18 वर्ष आयु के बच्चों व एकल महिलाओं को दो हजार पांच सौ रुपए प्रति माह की सहायता राशि देगी। इन संस्थानों के आवासियों को भारत के विभिन्न दर्शनीय अथवा ऐतिहासिक स्थलों का पंद्रह दिन का शैक्षिक भ्रमण प्रति वर्ष आयोजित करने का भी प्रावधान है, जिसमें आवासियों के लिए यात्रा की व्यवस्था शताब्दी ट्रेन, एसी वॉल्वो अथवा हवाई सुविधा के साथ – साथ थ्री स्टार होटलों में ठहरने की व्यवस्था होगी। योजना में इसी तर्ज पर वृद्धाश्रमों एवं नारी सेवा सदनों के आवासियों को भी प्रति वर्ष 10 दिन की यात्रा व ठहरने का प्रावधान किया गया है।

योजना के तहत बाल देखरेख संस्थानों को छोड़ने वाले सभी बच्चों के लिए 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने के बाद भी 21 वर्ष की आयु तक और अनाथ बच्चों के लिए 27 वर्ष की आयु तक वास्तविक दरों पर छात्रावास शुल्क और शिक्षण शुल्क प्रदान करने की व्यवस्था करने के साथ – साथ अध्ययन अवधि के दौरान छात्रवृत्ति के रूप में चार हजार रुपए प्रति माह प्रति बच्चे को उनके व्यक्तिगत खर्चों को पूरा करने के लिए सहायता राशि दी जाएगी। इस योजना के अंतर्गत पात्र आवासी, जो 18 वर्ष के आयु पूर्ण करने के बाद अपना स्टार्ट – अप आरंभ करना चाहते हैं, उन्हें दो लाख रुपए प्रति व्यक्ति एकमुश्त वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

मुख्यमंत्री सुख – आश्रय योजना के तहत अनाथ बच्चों को 18 वर्ष की आयु के बाद 27 वर्ष तक पश्चावर्ती देखभाल संस्थानों में आवासीय सुविधाओं के साथ – साथ भोजन, आश्रय और वस्त्र भी उपलब्ध करवाए जाएंगे। इस योजना के तहत जिन अनाथ बच्चों के नाम पर कोई भूमि नहीं है, उन्हें 27 वर्ष की आयु के बाद घर के निर्माण के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में तीन बिस्वा भूमि देने के साथ – साथ आवास निर्माण के लिए तीन लाख रुपए की सहायता राशि प्रदान की जाएगी।

योजना के तहत इन संस्थानों में रहने वाले सभी आवासियों को वस्त्र अनुदान के रूप में दस हजार रुपए की राशि प्रति वर्ष उनके बैंक खाते में जमा करवाई जाएगी ताकि वह अपने पसंद के वस्त्र व जूते खरीद सकें। इसके अतिरिक्त संस्थान में रहने वाले व्यक्तियों की देखभाल के लिए अतिरिक्त गृह माता अथवा पालक की नियुक्ति का भी योजना में प्रावधान किया गया है, ताकि उन्हें रहन – सहन में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े।

मुख्यमंत्री सुख – आश्रय योजना के तहत आवासीय को वर्ष भर आने वाले त्यौहार को मनाने के लिए प्रति त्यौहार 500 रुपए की अनुदान राशि भी दी जाएगी। योजना के तहत ऐसे वर्ग की सहायता के लिए 101 करोड़ के प्रारंभिक योगदान के साथ – साथ मुख्यमंत्री सुख – आश्रय सहायता कोष का गठन किया गया है।

दो माह बाद ढुलाई दरों पर ट्रक ऑपरेटरों एवं सीमेंट फैक्ट्री प्रबंधन में सहमति बनी

शिमला/शैल। प्रदेश सरकार की मध्यस्थता के बाद सीमेंट फैक्ट्री और ट्रक ऑपरेटर्ज के बीच जारी विवाद समाप्त हो गया है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में दोनों पक्षों ने ढुलाई की दरों पर सहमति जताई है।

बैठक के उपरांत मीडिया से अनौपचारिक बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि विवाद शुरू होने के बाद से ही वह व्यक्तिगत तौर पर भी इसके समाधान के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। उन्होंने कंपनी प्रबंधन और उच्च अधिकारियों से लगातार संवाद बनाए रखा। उन्होंने कहा कि सरकार की मध्यस्थता और लगातार बातचीत से कंपनी प्रबंधन ढुलाई की नई दरों पर सहमत हो गया है। उन्होंने कहा कि इस बैठक में बिलासपुर तथा सोलन जिला के ट्रक ऑपरेटर्ज तथा अदानी समूह के उच्चाधिकारियों की मौजूदगी में यह नई दरें निर्धारित की गई है जिसमें सिंगल एक्सेल के लिए 10 रुपये 30 पैसे प्रति मीट्रिक टन प्रति किलोमीटर तथा मल्टी – एक्सेल के लिए 09 रुपये 30 पैसे प्रति मीट्रिक टन प्रति किलोमीटर की ढुलाई दरें निर्धारित की गई हैं। उन्होंने कहा कि फैक्ट्री प्रबंधन ने कल से ही सीमेंट उत्पादन पुन: शुरू करने पर अपनी सहमति जताई है तथा ट्रक ऑपरेटर्ज भी इन दरों पर ढुलाई के लिए तैयार हो गए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ढुलाई दरों में वार्षिक वृद्धि से संबंधित मामलों के लिए प्रधान सचिव उद्योग तथा अन्य अधिकारी एक फार्मूला तय करेंगे। इसके अलावा ट्रक ऑपरेटर्ज की अन्य समस्याओं के निदान के लिए सोलन तथा बिलासपुर जिला के उपायुक्तों को निर्देश दिए गए हैं और वे कंपनी प्रबंधन के साथ मिलकर इसका समाधान सुनिश्चित करेंगे।

उन्होंने कहा कि सभी के समन्वित प्रयासों से इस मामले का सर्वमान्य हल संभव हो सका है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के सत्ता संभालने के 5 दिन के बाद ही यह विवाद सामने आया और सीमेंट फैक्टरी प्रबंधन ने उत्पादन रोकने की घोषणा कर दी। गत वर्ष 16 दिसंबर को ट्रक ऑपरेटर्ज हड़ताल पर चले गए थे। इसके उपरांत प्रदेश सरकार ने इस मामले की पूरी जानकारी प्राप्त की। प्रदेश सरकार लगातार ट्रक ऑपरेटर्ज और फैक्ट्री प्रबंधन के साथ बातचीत करती रही। दाड़लाघाट और बरमाणा स्थित सीमेंट फैक्ट्री का स्वामित्व बदलने के बाद प्रबंधन पुरानी दरों पर ढुलाई भाड़ा प्रदान करने को सहमत नहीं था और यहीं से विवाद बढ़ता गया।

उन्होंने कहा कि इस विवाद का सभी पक्षों को नुकसान हो रहा था। प्रदेश में सीमेंट उत्पादन रुकने से जहां आर्थिक तौर पर नुकसान हो रहा था वहीं इस से जुड़े ट्रक ऑपरेटर्ज, ट्रक चालक एवं परिचालक, गाड़ियों की मरम्मत तथा अन्य कार्यों में जुटे स्थानीय लोग, ढाबा संचालक इत्यादि हजारों परिवार भी आर्थिक तंगी की हालत में जा रहे थे। ऐसे में प्रदेश सरकार ने मानवीय दृष्टिकोण से भी इस मामले को हल करने के लिए लगातार प्रयास किए।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार का स्पष्ट मानना है कि ट्रक ऑपरेटर्ज के साथ – साथ वहां कार्य कर रहे कर्मचारियों तथा अप्रत्यक्ष तौर पर फैक्ट्री के आसपास रोजगार में लगे लोगों के परिवारों के हितों की रक्षा की जाए। साथ ही प्रदेश सरकार फैक्ट्री प्रबंधन को भी नुकसान के पक्ष में नहीं थी। प्रदेश सरकार का स्पष्ट मानना है कि राज्य में उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए और उन्हें हर संभव सुविधा प्रदान की जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी के हितों की रक्षा प्रदेश सरकार का ध्येय है। यही कारण रहा कि प्रदेश सरकार ने सर्वमान्य हल को प्राथमिकता दी।

मुख्यमंत्री ने इस विवाद को हल करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे सरकार के प्रतिनिधियों और अधिकारियों की टीम की सराहना की।

मुख्यमंत्री ने इस पूरे घटनाक्रम के दौरान धैर्य और सौहार्द बनाए रखने के लिए ट्रक ऑपरेटर्ज और कंपनी प्रबंधन का भी आभार व्यक्त किया।

बैठक में मुख्य संसदीय सचिव संजय अवस्थी, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (मीडिया) नरेश चौहान, बिलासपुर ट्रक ऑपरेटर यूनियन के अध्यक्ष राकेश ठाकुर तथा अन्य प्रतिनिधि और सोलन जिला से ट्रक ऑपरेटर यूनियन के अध्यक्ष जयदेव कौंडल तथा अन्य प्रतिनिधि शामिल हुए। अडानी समूह की ओर से मनोज जिंदल और संजय वशिष्ट ने बैठक में भाग लिया।

प्रधान सचिव परिवहन आर.डी. नज़ीम, निदेशक परिवहन अनुपम कश्यप, निदेशक खाद्य एवं आपूर्ति केसी चमन, उपायुक्त बिलासपुर पंकज राय और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी बैठक में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय शिवरात्रि महोत्सव का विधिवत शुभारंभ किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने मंडी के ऐतिहासिक पड्डल मैदान से विश्व विख्यात अन्तरराष्ट्रीय शिवरात्रि

महोत्सव का विधिवत शुभारंभ किया।

इससे पहले, मुख्यमंत्री ने मुख्य देवता राज माधोराय के मंदिर में शीश नवाया तथा मंदिर से शुरू हुई पारंपरिक शोभा यात्रा जलेब में भाग लिया। पारंपरिक परिधानों से सजे हजारों श्रद्धालुओं ने देवी – देवताओं की पालकियों को पड्डल मैदान तक पहुंचाया। यह शोभा यात्रा पड्डल मैदान में संपन्न हुई। पारंपरिक शोभा यात्रा 'शाही जलेब' में जिले के लगभग सभी हिस्सों से आये 200 से अधिक देवी – देवताओं ने भाग लिया।

मुख्यमंत्री ने पगड़ी समारोह में भी भाग लिया और श्री राज माधोराय मंदिर में विधिवत पूजा – अर्चना की।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने लोगों को महाशिवरात्रि की बधाई देते हुए कहा कि मंडी शिवरात्रि देव समाज का पर्व है और प्रदेश के इतिहास में पहली बार प्रदेश सरकार एक करोड़ रुपये से अधिक व्यय कर देव समाज को लाभान्वित कर रही है।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय शिवरात्रि महोत्सव मंडी ने समृद्ध संस्कृति, भाईचारे और प्रेम को दर्शाने वाली उच्च परंपराओं का संवर्धन किया है। मेले और त्यौहार हमारी समृद्ध संस्कृति और परंपरा को दर्शाते हैं। उन्होंने कहा कि मंडी शिवरात्रि की अपनी एक अनूठी पहचान है और देश भर में अपनी विविध परंपरा के लिए जानी जाती है। आधुनिकता के इस दौर में भी मंडी महोत्सव के दौरान पारंपरिक परंपराओं का निर्वहन सुनिश्चित किया जाता है। सात दिवसीय उत्सव के दौरान देव समागम मंडी शहर को एक भव्य स्वरूप प्रदान करता है। यह हम सबका सामूहिक दायित्व है कि हम देवभूमि की समृद्ध परंपराओं और संस्कृति का संरक्षण करें ताकि आने वाली पीढ़ियां इस पर गर्व कर सकें।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य की कमज़ोर आर्थिक स्थिति के बावजूद प्रदेश के विकास कार्यों में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने दी जायेगी। प्रदेश सरकार ने राज्य की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने, भ्रष्टाचार को दूर करने और युवाओं को नशे से बचाने के लिए विशेष प्रयास शुरू किये हैं। प्रदेश की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए बिजली परियोजनाओं पर वाटर सेस लगाया गया है और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिये टेंडर प्रक्रिया की अवधि कम कर दी गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार का आगामी बजट शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य की चुनौतियों के समाधान पर केंद्रित रहेगा।

हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष और सांसद प्रतिभा सिंह ने शिवरात्रि के शुभ अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि यह क्षेत्र के लिये अविस्मरणीय क्षण है जब मंडी के लोगों को देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करने का मौका मिला है।

स्वतंत्र होने का साहस करो जहाँ तक तुम्हारे विचार जाते हैं वहां तक जाने का साहस करो, और उन्हें अपने जीवन में उतारने का साहस करो। ..... स्वामी विवेकानंद

सम्पादकीय

क्या अदानी के ग्रहण से निकल पायेंगे मोदी

अदानी प्रकरण पर हिन्डनबर्ग के खुलासे से जो परिस्थितियां निर्मित हुई है उनसे पूरा देश हिल कर रह गया है। क्योंकि इस खुलासे से अन्तरराष्ट्रीय शेयर बाजार से लेकर देश के शेयर बाजार में अदानी समूह के शेयरों में गिरावट आयी है। इस गिरावट से देश विदेश के हर निवेशक को नुकसान हुआ है। इसमें सबसे गंभीर पक्ष यह है कि देश के सार्वजनिक बैंकों और एलआईसी तक ने इस समूह में निवेश किया है। बैंकों ने तो कर्ज भी दिया है। लगभग हर सार्वजनिक क्षेत्र का प्रबन्धन इस समूह के पास है। ऐसे में यह स्थिति बन चुकी हैं कि इस समूह के डूबने से पूरे देश की अर्थव्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लग जायेगा। संसद में इस प्रकरण पर उठे विपक्ष के सवालों का कोई जवाब नहीं आया है। प्रधानमंत्री का भाषण भी ''सवाल गंदम और जवाब चना'' बनकर रह गया है। इस प्रकरण पर उठे सवालों के परिदृश्य में संसद कुछ समय के लिये स्थगित करनी पड़ी है। सर्वोच्च न्यायालय में इस पर आयी याचिकाओं पर शीर्ष अदालत ने अपने स्तर पर जांच करवाने का भरोसा देश को दिया है। इस जांच के लिये सरकार द्वारा सुझाये नामों को शीर्ष अदालत ने अस्वीकार कर दिया है। सरकार ने हिन्डनबर्ग के खुलासे को देश पर हमला कर दिया है लेकिन इस सवाल का जवाब नहीं दिया है कि देश के करीब सारे बड़े सार्वजनिक प्रतिष्ठान इस समूह के पास कैसे पहुंच गये? देश का सबसे अमीर व्यक्ति शीर्ष करदाताओं के पहले दस नामों में भी शामिल क्यों नहीं है। यह सामान्य सवाल आज देश के हर नागरिक के दिमाग में आ चुके हैं यह एक कड़वा सच है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा है। क्योंकि हिन्डनबर्ग के खुलासे के साथ ही गुजरात दंगों को लेकर बी.बी.सी. कि एक डॉक्यूमैन्ट्री आ गयी इस पर प्रतिबन्ध लगाते हुये बी.बी.सी. पर ही प्रतिबन्ध लगाने की मांग के आश्य की याचिका सर्वोच्च न्यायालय में पहुंच गयी। सर्वोच्च न्यायालय ने इस आग्रह को अस्वीकार कर दिया। इस याचिका से कश्मीर फाईल्ज पर प्रधानमंत्री का यह तर्क फिर चर्चा में आ गया की यदि कश्मीर फाईल्ज से हटकर किसी के पास और तथ्य हैं तो उसे अलग से फिल्म बनाकर सामने लाना चाहिये। ठीक यही तर्क बी.बी.सी. की डॉक्यूमैन्ट्री पर लागू होता है। बी.बी.सी. के खुलासे के बाद बी.बी.सी. पर छापेमारी हो गयी। इसके बाद विश्व के सबसे प्रतिष्ठित अखबार दी गार्जियन का खुलासा गया। दी गार्जियन के खुलासे के बाद ईजरायल की कंपनी को लेकर यह सामने आ गया कि उसने भारत के में चुनावों को प्रभावित किया है। मोदी सरकार हर खुलासे पर खामोश है। यह भी नहीं कह पा रही है कि यह सब गल्त है। कांग्रेस लगातार सरकार और प्रधानमंत्री से इस सब पर प्रतिक्रिया की मांग कर रही है।

इस तरह जो परिस्थितियां बनती जा रही हैं वह भाजपा, केंद्र की सरकार और स्वयं प्रधानमंत्री मोदी के लिये कठिनाइयां पैदा करेंगी यह तय है। क्योंकि एक आदमी अदानी के डूबने से देश के डूबने की व्यवहारिक स्थिति बन गयी है। महंगाई और बेरोजगारी लगातार बढ़ेगी। हालात एक और जनान्दोलन की ओर बढ़ रहे हैं। हिन्दू-मुस्लिम, मन्दिर-मस्जिद के नाम पर अब फिर ध्रुवीकरण होना संभव नहीं लग रहा है। क्योंकि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ने पूरा परिदृश्य बदल कर रख दिया है। आज राहुल गांधी नरेंद्र मोदी से बड़ा नाम बन गया है। राहुल की छवि बिगाड़ने के सारे प्रयास अर्थहीन होकर रह गये हैं। ऐसे में कांग्रेस को कमजोर करने के लिये कांग्रेस की सरकारों और उसके राज्यों के नेतृत्व को कमजोर करने की रणनीति अपनाई जायेगी यह तय है। इसमें यह देखना दिलचस्प होगा कि कांग्रेस का राज्यों का नेतृत्व इस स्थिति का कैसे मुकाबला करता है।

केरल उच्च न्यायालय के फैसले से आखिर नाराज क्यों है मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड?

गौतम चौधरी

भारत सरकार के द्वारा तीन तलाक पर मुकम्मल कानून बना दिये जाने के बाद एक बार फिर माननीय न्यायालय और ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीएलबी) आमने सामने है। मामला केरल उच्च न्यायालय का है। विगत दिनों माननीय केरल उच्च न्यायालय ने एक अहम फैसले में कहा, ''शादी को समाप्त करना एक मुस्लिम पत्नी का अधिकार है। खंडपीठ ने कहा कि यह कुरान के अनुसार था और इस कदम को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए अपने पति के फैसले से वह प्रभावित नहीं हो सकती। हाई कोर्ट ने आगे कहा कि वह इस्लामी उलेमाओं की राय के सामने आत्मसमर्पण नहीं करेंगे, जिनके पास कानून के मुद्दे पर कोई कानूनी प्रशिक्षण नहीं है। हाई कोर्ट ने कहा कि इसमें कोई शक नहीं, विश्वासों और प्रथाओं से संबंधित मामलों में उनकी राय अदालत के लिए मायने रखती है और अदालत को उनके विचारों के लिए सम्मान होना चाहिए।'' कोर्ट ने आगे खुला से संबंधित कुरान की आयत का भी जिक्र किया। माननीय न्यायालय ने कहा, ''पवित्र कुरान के अध्याय 2, आयत 229 में महिलाओं को अधिकार प्राप्त है। यह स्पष्ट रूप से घोषित करता है कि एक मुस्लिम पत्नी को अपनी शादी को समाप्त करने का अधिकार है।'' केरल उच्च न्यायालय के इसी फैसले पर मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड नाराज है। बोर्ड के महासचिव मौलाना खालिद सैफुल्ला रहमानी ने एक बयान जारी कर कहा, ''माननीय केरल उच्च न्यायालय का यह फैसला हमें मान्य नहीं है। यह शरिया कानून की अनदेखी है। कोर्ट के इस फैसले को हम अस्वीकार करते हैं।''

दरअसल, मामला एक मुस्लिम पति के द्वारा दाखिल की गयी थी जिसमें मुस्लिम विवाह अधिनियम 1939 का हवाला देते हुए बताया गया था कि उसकी पत्नी द्वारा दिये गए तलाक यानी खुला को माननीय न्यायालय खारिज कर दे। माननीय उच्च न्यायालय से इसे खारिज करने से इन्कार कर दिया और अपनी तल्ख टिप्पणी में बेहद महत्वपूर्ण बात कही। न्यायमूर्ति ए मोहम्मद मुस्ताक और सीडी डायस की खंडपीठ ने कहा कि ''शादी को समाप्त करना एक मुस्लिम पत्नी का अधिकार है।'' अब मामला दो न्यायिक संस्थाओं के बीच विवाद को जन्म दे रहा है। एक ओर भारतीय मुसलमानों की सबसे प्रभावशाली कानूनी संस्था मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड है, तो दूसरी ओर माननीय न्यायालय। दोनों के अपने अपने तर्क हैं और दोनों ने मामले को अपने अपने तरीके से देखने व समझने का प्रयास किया है। अब सवाल यह उठता है कि आखिर इस्लाम इस मामले में क्या कहता है? इस बात की भी व्याख्या माननीय न्यायालय ने की है। उन्होंने पवित्र कुरान का जिक्र किया है और साफ शब्दों में कहा है कि कुरान महिलाओं की आजादी की रक्षा करता है और महिलाओं द्वारा एकतरफा विवाह विच्छेद की इजाजत देता है। माननीय न्यायालय ने पवित्र कुरान की उस आयत का भी जिक्र किया है, जिसमें इस प्रकार की बात बतायी गयी है बावजूद इसके मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड अड़ंगा लगा रहा है।

भारतीय उलेमाओं का एक समूह महिला को खुला देने की बात की अपने तरीके से व्याख्या करते हैं। इस मामले में वे हदीस को ज्यादा महत्व देते हैं और साफ शब्दों में कहते हैं कि जब तक पुरुष खुले के लिए राजी न हो तब तक विवाह विच्छेद संभव ही नहीं है। मौलाना रहमानी साहब कहते हैं कि इस्लाम में केवल चार प्रकार के तलाक के विकल्प की मान्यता है। पहला, ट्रिपल तलाक है, जिसमें पति को तलाक देने का अधिकार है। दूसरा, खुला, जहां आमतौर पर पत्नी की ओर से तलाक ले लिया जाता है और पति के स्वीकार करने के बाद लागू होता है। तीसरा, तलाक-ए-तफवीज (प्रत्यायोजित तलाक) है, इसके तहत भावी पत्नी ने निकाहनामा (विवाह अनुबंध) में उल्लेख किया है कि अगर वह उसके साथ अमानवीय व्यवहार करता है, मानसिक और शारीरिक यातना देता है या अपने अधीन रखने की कोशिश करता है तो उसे अपने पति की सहमति के बिना तलाक के लिए अधिकृत किया जाएगा। चौथा विकल्प काजी और अदालत के समक्ष तलाक की प्रक्रिया संपन्न होती है। उन्होंने कहा कि शरिया में तलाक का कोई अन्य तरीका नहीं बताया गया है। केरल हाई कोर्ट ने इस्लामी न्यायशास्त्र के आलोक में तलाक के प्रावधानों की व्याख्या करने के अपने संक्षिप्त विवरण को पार कर लिया है।

इस्लाम बेहद मानवीय धर्म है। इसमें कई ऐसी बातों को महत्व दिया गया है, जो अमूमन अन्य धर्मों में देखने को नहीं मिलता है। इस्लाम अपने अनुयायियों को इजाजत देता है कि अगर पति-पत्नी सहज तरीके से जीवन नहीं जी पा रहे हैं तो उन्हें आपस में अलग होने का पूरा अधिकार है। यह अधिकार जितना पुरूषों को है उतना ही महिलाओं को भी है। इस्लामिक विद्वानों की मानें तो इस्लाम में जिस प्रकार पुरूष को विवाह अनुबंध तोड़ने के लिए तलाक का विकल्प दिया गया है, उसी प्रकार महिलाओं को पुरूष किसी भी मामले में पसंद नहीं हैं, या फिर वैवाहिक जीवन असहज है तो उन्हें भी वैवाहिक अनुबंध तोड़ने का मुकम्मल अधिकार है। इस अधिकार को इस्लामिक कायदे में खुला कहा जाता है। खुले को लेकर मुस्लिम उलेमाओं का एक तबका बेहद उत्साहित है। वे इस बात को प्रचारित करने में लगे हैं कि खुला तभी संभव है जब पुरुष पक्ष इसकी इजाजत दे लेकिन कायदों में इस प्रकार की चर्चा कतई नहीं है।

इस मामले में आधुनिक मुसलिम समाज का पितृसत्तात्मक चेहरा साफ दिखता है। प्रचारित किया जा रहा है कि एक मुस्लिम महिला, एक बार जब किसी पुरुष के साथ निकाह कर लेती है, तो उसके पास अनुबंध को भंग करने का कोई रास्ता नहीं होता है, जब तक कि पुरुष उसे तलाक नहीं देता है, या खुला या फस्ख (न्यायिक तलाक) द्वारा उसके प्रस्ताव से सहमत नहीं होता है। यहां तक कि अगर पुरुष उसके साथ हिंसा करता है, उसे दहेज के लिये प्रताड़ित करता है और उसे उसके माता-पिता से मिलने या उसके सपनों को पूरा करने से रोकता है, तब भी वह शादी को तब तक खत्म नहीं कर सकती जब तक कि पुरुष खुला की सहमति न दे दे। यह इस्लाम पर पुरुषों के एकाधिकार को दर्शाता है।

सच पूछिए तो महिलाओं के अधिकार की कुछ उलेमाओं द्वारा की गयी व्याख्या संदिग्ध ही नहीं अपमानजनक भी है। यहां तक कि एक बार में तीन तलाक के मामले में भी, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने मौलवियों द्वारा इसकी गलत व्याख्या पर कुरान की सर्वोच्चता को बहाल करते हुये इसे अमान्य कर दिया था। सच तो यह है कि इस्लाम को पुरुषों के एकाधिकार में बदल दिया गया है। जहां कुछ उलेमाओं द्वारा महिलाओं के हर कार्य, अधिकार और विशेषाधिकार को जांचा जाता है। यह न तो धर्म के अनुकूल है और न ही आधुनिक समाज इसे स्वीकार करेगा। वास्तविकता तो यह है कि यह इस्लामिक कानून है भी नहीं। इसे वर्ष 1917 में ओटोमन साम्राज्य में लागू किया गया था। अब इसे बदलने की जरूरत है।

राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए पर्यटन क्षेत्र में बहुआयामी प्रयास

शिमला। हिमाचल प्रदेश की मनोहारी वादियां, ऐतिहासिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पर्यटन क्षेत्र राज्य की आर्थिकी को संबल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

व्यवस्था परिवर्तन के ध्येय में साथ निरंतर आगे बढ़ रही प्रदेश सरकार राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने के लिये दृढ़ प्रयास कर रही है। प्रदेश सरकार राज्य में धार्मिक, स्वास्थ्य और धरोहर पर्यटन को व्यापक प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। जनसंख्या की दृष्टि से कांगड़ा प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है और इसे प्रदेश के मुख्य पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर प्रदेश की पर्यटन राजधानी के रूप में पहचान दिलाने के सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रदेश सरकार हर जिला मुख्यालय के समीप हेलीपैड बनाने के लिए प्रतिबद्ध है और इन हेलीपैड के निर्माण के लिये भूमि चिन्हित करने की प्रक्रिया प्रगति पर है। प्रदेश के मौजूदा हवाई अड्डों को विस्तार प्रदान करने की भी योजना पर भी कार्य किया जा रहा है।

प्रदेश का कांगड़ा जिला प्राचीन मंदिरों, बौद्ध मठों, गिरिजाघरों, जलाशयों, विश्व प्रसिद्ध बिलिंग पैराग्लाइडिंग स्थल, हिमाच्छदित धौलाधार पर्वतमालाओं और झीलों के लिए सुप्रसिद्ध हैं। इन्हें पर्यटन की दृष्टि से और विकसित किया जा रहा है। प्रदेश सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रम के माध्यम से कांगड़ा जिले को पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित किया जाएगा।

प्रदेश में गतिविधि आधारित पर्यटन को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा जिससे राज्य के युवाओं को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे तथा यह प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में मील पत्थर साबित होगा।

प्रदेश सरकार कांगड़ा के देहरा में अंतरराष्ट्रीय मापदंडों वाले चिड़ियाघर तथा गोल्फ कोर्स स्थापित करने पर भी विचार कर रही है।

धौलाधार की नैसर्गिक सुंदरता के प्रति पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये प्रदेश सरकार की धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं के बेस कैंप में 'टेंट सिटी' स्थापित करने की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्रस्तावित है तथा इन श्रृंखलाओं को संपर्क सुविधा से भी जोड़ा जाएगा। शुरूआती चरण में लगभग सभी सुविधाओं से युक्त 200 टेंट स्थापित किये जाएंगे।

इस दिशा में हाल ही में मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू की गोवा के मुख्यमंत्री के साथ हुई। एक बैठक में दोनों राज्यों में समुद्र और पहाड़ के अनुभव को एक साथ मिलाने के लिए सहयोग करने पर सहमति बनी है ताकि इसे दुनिया में एक अनूठा गंतव्य बनाया जा सके। समुद्र-पर्वतीय आधारित विषय विज्ञान कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के आदान-प्रदान की श्रृंखला के माध्यम से फोर-टी यानि ट्रेड, टूरिज्म, टैक्नोलॉजी एवं टैलेंट की क्षमता बढ़ोत्तरी पर कार्य किया जाएगा।

प्रदेश सरकार वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के तहत 25 स्थलों को पर्यटक आकर्षण स्थलों के रूप में विकसित करने पर भी विचार कर रही है।

इसके अतिरिक्त राज्य में जलाशय पर आधारित पर्यटन को विशेष रूप से प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है। चंबा स्थित चमेरा डैम, रामसर आर्द्रभूमि स्थल तथा बिलासपुर की गोविंदसागर झील को जल क्रीड़ा गतिविधियों पर आधारित स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। भविष्य में सरकार युवाओं को पेडल बोट या हाइड्रोफॉयल बाइक खरीदने के लिए उपदान की सुविधा भी प्रदान करेगी। इससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

प्रदेश में माउंटेन बाइकिंग, गोल्फ, हॉट-एयर बैलूनिंग, हेली-स्कीइंग, शीतकालीन खेलों जैसे स्नो मैराथन और आइस हॉकी जैसी गतिविधियों को विस्तृत स्तर पर बढ़ावा प्रदान किया जाएगा। इसके अलावा, कयाकिंग, वॉटर स्कीइंग, हाउस बोट अकॉमोडेशन, कैंपिंग, राफ्टिंग आदि गतिविधियां भी आरम्भ की जाएंगी और स्थानीय युवाओं को इस तरह की गतिविधियों के लिए पेशेवरों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जायेगा। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पैराग्लाइडरों के लिये बीड़-बिलिंग पैराग्लाइडिंग साइट को विकसित किया जायेगा।

अटल टनल लाहौल के उत्तरी छोर पर स्थित सिस्सू एक पसंदीदा पर्यटन स्थल बन गया है। सिस्सू एडवेंचर क्लब और टूरिज्म सोसाइटी सिस्सू में पर्यटन की विभिन्न गतिविधियों को बढ़ावा दे रही है जिससे जनजातीय जिले के लोगों की आर्थिकी में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। स्पीति के काजा में आइस हॉकी चैंपियनशिप की मेजबानी की गई। अब सार्वजनिक-निजी भागीदारी से शीतकालीन खेलों को बढ़ावा देने के लिए भी बहुआयामी प्रयास किये जा रहे हैं।

प्रदेश सरकार द्वारा राज्य के सभी धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है। पार्किंग स्थलों के अलावा सभी धार्मिक स्थलों में बुनियादी अधोसंरचना को सुदृढ़ करने की दिशा में कार्य किये जा रहे हैं। राज्य सरकार के इन प्रयासों से निश्चित रूप से प्रदेश में पर्यटन को नये पंख लगेंगे और इससे राज्य की आर्थिकी को भी संबल मिलेगा।

चीड़ की पत्तियों से धुंआरहित कोयला तैयार कर रहे द्रमण के ग्रामीण

शिमला। वन संपदा के संरक्षण में स्वरोजगार की बेमिसाल संभावनाएं सरकार के सहयोग से धरातल पर अपना रंग दिखाने लगी है, जंगल के लिए कभी विनाशक मानी जाने वाली चीड़ की पत्तियां ग्रामीणों के लिए अजीविका का भरोसेमंद सहारा बनने लगी हैं, चीड़ की पत्तियों से धुंआ रहित कोयला बनाकर ग्रामीण अब आमदनी अर्जित कर रहे हैं वहीं वन संपदा के संरक्षण के संदेश को

भी जन जन तक पहुंचा रहे हैं।

सुंदरनगर उपमंडल के चांबी पंचायत के द्रमण गांव के 15 के करीब परिवार चीड़ की पत्तियों से धुंआ रहित कोयला तैयार कर रहे हैं इससे प्रत्येक परिवार को एक सीजन में पंद्रह हजार के करीब आमदनी भी हो रही है। सरकार की ओर से चांबी पंचायत को चीड़ की पत्तियों से धुआं रहित कोयला तैयार करने के लिए ग्रामीणों को प्रशिक्षण के साथ साथ मोल्डिंग मशीन भी निशुल्क उपलब्ध करवाई गई हैं।

धुंआ रहित कोयला तैयार करने में जुटी सावित्री देवी ने बताया कि उनके गांव के आसपास चीड़ के घने जंगल हैं इन जंगलों में गर्मियों के दौरान वनाग्नि का खतरा मंडराता रहता था लेकिन सरकार की ओर से चीड़ की पत्तियों से धुंआ रहित कोयला तैयार करने के लिए प्रेरित किया गया इससे एक तो आमदनी का साधन उपलब्ध हो गया वहीं जंगलों में गर्मियों के दिनों में आग का खतरा भी कम हो गया है। इससे वन्य प्राणियों को भी राहत मिली है। इसी तरह श्रवण कुमार ने कहा कि चीड़ की पत्तियों से धुंआ रहित कोयला तैयार करने के लिए सरकार की ओर से सुंदरनगर में प्रशिक्षण हासिल किया है और अन्य ग्रामीणों को भी इससे जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया है। उन्होंने कहा कि ढाबों, रेस्तरां इत्यादि के कारोबार से जुड़े लोग धुंआ रहित कोयला उनके गांव से ही खरीद कर ले जाते हैं इसकी डिमांड भी काफी है। उनके गांव से ही एक सीजन में दो से तीन लाख का धुंआ रहित कोयला तैयार करके बेचा जाता है।

कैसे तैयार होता है चीड़ की पत्तियों से धुंआ रहित कोयला:

चीड़ की पत्तियों से कोयले के निर्माण की विधि भी आसान है। पहले इसको विशेष खास ड्रम के भीतर कम आक्सीजन की स्थिति में जलाया जाता है। तारकोल जैसे रूप में परिवर्तित होने पर इसमें लगभग 10 प्रतिशत चिकनी मिटी का घोल बनाकर आटे की तरह गूंथा जाता है। इस मिश्रण को मोल्डिंग मशीन में डालकर कोयला बनाया जाता है।

चीड़ की पत्तियों के उपयोग से फायदे:

हिमाचल में चीड़ वनों की बहुतायत है और इनका क्षेत्रफल लगातार बढ़ रहा है। गर्मियों में चीड़ की पत्तियां आग का मुख्य कारण रहे हैं। एक अनुमान के मुताबिक हर वर्ष सैकड़ों हेक्टेयर वन क्षेत्र चीड़ की पत्तियों के कारण जल जाता है। जमीन के नमी सोखने के कारण चीड़ के इर्द-गिर्द दूसरे पेड़-पौधे नहीं उग पाते हैं और इसे पहाड़ों में पेयजल संकट के लिए भी जिम्मेदार माना जाता है। चीड़ की पत्तियों से धुंआ रहित कोयला तैयार होने से जंगलों की आग पर अंकुश लगेगा वहीं ग्रामीणों को आमदनी का एक साधन उपलब्ध होगा इसके साथ धुंआ रहित यह ईंधन स्वास्थ्य पर बुरा असर नहीं डालता है। इसके कारण जलावन के लिए लकड़ियों की कम कटाई से पर्यावरण भी संतुलित रहता है।

हिमाचल की संस्कृति देश और दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचेगी

शिमला। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा कार्य व खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने दूरदर्शन के डीडी हिमाचल चैनल की 24 घंटे प्रसारण सेवाओं का शुभारंभ किया। डीडी हिमाचल अब शिमला से 24 घंटे कार्यक्रमों और खबरों का प्रसारण करेगा।

डीडी हिमाचल डीटीएच पर भी उपलब्ध होगा, जिसके माध्यम से प्रदेश की कला, संस्कृति, साहित्य, पर्यटन व धार्मिक स्थलों, खेल गतिविधियों तथा विभिन्न उपलब्धियों से संबंधित जानकारी देश और दुनिया तक पहुंचेगी।

डीडी हिमाचल प्रदेश का पहला 24 घंटे का चैनल है। इस चैनल को केवल नेटवर्क के साथ साथ तमाम डीटीएच प्लेटफार्म पर देखा जा सकेगा। हिमाचल प्रदेश के बहुत से लोग देश के भिन्न-भिन्न राज्यों व विदेशों में रहते हैं और बहुत समय से मांग थी कि हिमाचल प्रदेश के जुड़े कार्यक्रमों व समाचारों को देखने-सुनने में, न ही समय की बाध्यता हो और इसे राज्य के बाहर भी टिवी पर देखा जो सके। इसी मांग को देखते हुए मार्च 2019 में जहां दूरदर्शन केंद्र शिमला से होने वाले स्थानीय प्रसारण को सेटेलाइट फुटप्रिंट देते हुए प्रसार भारती नेटवर्क के डीटीएच प्लेटफॉर्म डीडी फ्रीडिश पर जगह दी गयी । वहीं अप्रैल 2020 से स्थानीय प्रसारण और डीडी होम के मिश्रण के साथ 24X7 ऑपरेशंस शुरु हुआ। डीडी हिमाचल प्रदेश 3 बजे से लेकर 7 बजे तक प्रादेशिक कार्यक्रम व समाचार प्रसारित करता है।

राज्य के लोगों की जनभावना और आकांक्षाओं को मूर्त रुप देने के लिए, हिमाचल प्रदेश राज्य के विविध आयामों से लोगों को और मजबूती एवं प्रभावी तरीके से परिचित कराने के लिए राज्य के कलाकारों को एक मंच प्रदान करने और युवाओं की रचनाशीलता को अवसर प्रदान करने के लिए 24X7दूरदर्शन हिमाचल को 24X7 किया जाना पूरे प्रदेश के लिए हर्ष का विषय है।

दूरदर्शन हिमाचल दूरदर्शन नेटवर्क का हिमाचल प्रदेश राज्य के लिए समर्पित सेटेलाइट चैनल है जो राज्य की राजधानी शिमला के दूरदर्शन केंद्र से प्रसारित किया जाता है। 7 जून 1995 को इस कैंद्र की स्थापना हिमाचल प्रदेश के लोगों द्वारा लंबी चली आ रही मांग को देखते हुए की गयी थी। शुरूआती तौर पर इसका प्रसारण केवल आधे घंटे था जिसे बाद में 8 अक्तूबर 2000 को बढ़ाकर 2 घंटे और बाद में 4 घंटे कर दिया गया। वर्तमान में इस चैनल पर 4 घंटे स्थानीय कार्यक्रम और बाकी समय डीडी न्यूज़ प्रसारित किया जाता है। डीडी हिमाचल राज्य के विविध आयामों जैसे कि सांस्कृतिक, इतिहास, कला- संस्कृति, साहित्य, व्यक्तित्व, समाचार और समसामयिक मामलों से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण करता है।

देव भूमि के साथ वीर भूमि कहे जाने वाले इस राज्य की सभ्यता-संस्कृति की जड़ें भी काफी गहरी हैं। भारत के उत्तरी भाग में स्थित यह पर्वतीय राज्य हिमालय की चोटियां लगातार प्रवाहमान नदियों और घाटियों से आच्छादित हैं। प्रकृति के मनोहर दृश्यों से भरे इस राज्य में जैव-विविधता भी प्रचुर है। पर्यटन के लिए देश-विदेश से पर्यटक काफी संख्या में इस राज्य में आते हैं। हस्तशिल्प और विविध कलाओं के साथ-साथ धार्मिक स्थलों के लिए भी यह राज्य जाना जाता है। प्रदेश के जुड़ी ऐसी कई वीर गाथाएं हैं जिन्हें लोग जानना चाहते हैं। कैप्टन विक्रम बत्र की वीरता युवाओं को देश के लिए मर-मिटने की प्रेरणा देती है और दूरदर्शन हिमाचल ऐसी ही प्रेरक कहानियों को एक मंच प्रदान करेगा ताकि वे सभी लोगों में देश के प्रति राष्ट्रभावना जागृत कर सके।

एचआरटीसी में विद्युत चालित वाहनों का समावेश किया जाएगा: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने परिवहन विभाग की एक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। इसमें उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार हिमाचल को वर्ष 2025 तक हरित ऊर्जा राज्य बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा हरित ऊर्जा के अधिकतम दोहन को प्राथमिकता प्रदान करते हुए इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में विद्युत चालित वाहनों के संचालन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि परिवहन विभाग को विद्युत चालित वाहनों से लैस कर दिया गया है और अब हिमाचल पथ परिवहन निगम में भी विद्युत चालित वाहनों का समावेश किया जाएगा। उन्होंने परिवहन निगम के बेड़े में चरणबद्ध ढंग से विद्युत चालित बसें शामिल करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने परिवहन निगम को विद्युत चालित वाहन निर्मात्ताओं के साथ बैठक कर विभिन्न औपचारिकताएं पूर्ण करने को भी कहा। उन्होंने कहा कि विद्युत चालित वाहनों की खरीद तथा चार्जिंग सुविधा के लिए आधारभूत ढांचा विकसित करने तथा इसमें अपनाई जा रही अत्याधुनिक तकनीकों का अध्ययन भी किया जाये।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार स्थानीय लोगों तथा बाहर से आने वाले यात्रियों को बेहतर परिवहन सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए दृढ़ संकल्प है। सार्वजनिक परिवहन सेवाओं में रोजगार के अवसर सृजित करते हुए प्रदेश के युवाओं को भी इससे जोड़ा जाएगा। युवाओं के माध्यम से स्थानीय स्तर पर ई-टैक्सी जैसी सुविधा प्रदान करने पर भी विचार किया जाएगा।

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने भी अपने बहुमूल्य सुझाव दिए।

बैठक में मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (सूचना प्रौद्योगिकी एवं नवाचार) गोकुल बुटेल, प्रधान सचिव परिवहन आर.डी. नजीम, परिवहन निगम के प्रबन्ध निदेशक संदीप कुमार तथा निदेशक परिवहन अनुपम कश्यप भी उपस्थित थे।

नौणी विवि के 22 वैज्ञानिक अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए चयनित

शिमला/शैल। शिक्षकों को अंतरराष्ट्रीय अनुभव प्रदान करने के अपने प्रयासों के तहत डॉ. यशवंत सिंह परमार औदयानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी 22 वैज्ञानिकों को अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए प्रतिष्ठित संस्थानों और विश्वविद्यालयों भेजेगा। युवा वैज्ञानिकों के साथ-साथ वरिष्ठ प्रोफेसर भी इन 22 वैज्ञानिकों में शामिल हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय द्वारा यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया, फ्रांस, थाईलैंड और इजराइल के प्रतिष्ठित संस्थानों और विश्वविद्यालयों में 15 दिन से लेकर 3 महीने तक के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिये चुना गया है। यह अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विश्वविद्यालय में कार्यान्वित की जा रही आईसीएआर एन.ए.एच.ई.पी. संस्थागत विकास परीयोजना के तहत प्रायोजित है।

नौणी विवि के कुलपति प्रोफेसर राजेश्वर सिंह चंदेल ने बताया कि ये 22 चयनित वैज्ञानिक संबंधित संस्थानों और विश्वविद्यालयों के सलाहकारों के साथ अंतरराष्ट्रीय प्रयोगशालाओं में काम करेंगे। सभी अपने पेशेवर क्षेत्रों में अनुसंधान के नये आयामों के बारे में जानेंगे। उन्होंने बताया कि प्राप्त ज्ञान और कौशल का उपयोग नौणी में छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जायेगा। प्रोफेसर चंदेल ने कहा कि वैज्ञानिकों के अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभाशाली वैज्ञानिक जनशक्ति के निर्माण के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उन्नयन करना है जो हिमालय क्षेत्र में विकास के नये अवसर पैदा करेगा। प्रोफेसर चंदेल ने आईसीएआर को धन्यवाद देते हुए कहा कि आईडीपी परियोजना अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उद्यमशीलता कौशल के साथ बागवानी और वानिकी में शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करेगा।

विश्वविद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए वैश्विक स्तर पर अच्छे रैंक वाले शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों और उद्योगों के साथ संबंध मजबूत करने और स्थापित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा, विश्वविद्यालय बागवानी और वानिकी के क्षेत्र में सक्षम मानव संसाधन विकसित करने का भी प्रयास कर रहा है।

परियोजना के मुख्य अन्वेषक डॉ. केके रैना ने बताया कि इन 22 वैज्ञानिकों के अलावा इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए विवि के और वैज्ञानिकों को भेजने का प्रयास किया जा रहा है। विदेशी अनुभव के अलावा वैज्ञानिकों को विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं का दौरा करने और सेमिनार और कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय विनिमय कार्यक्रम के लिये चयनित वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कुमार हांडा, डॉ. राजेश कौशल, डॉ. डीआर भारद्वाज, डॉ. राकेश शर्मा, डॉ. सविता जडैक, डॉ. सुमित वशिष्ठ, डॉ. सुनीता चंदेल, डॉ. अशोक कुमार ठाकुर, डॉ. मोनिका शर्मा, डॉ. विपन गुलेरिया, डॉ. एसके भारद्वाज, डॉ. दिनेश ठाकुर, डॉ. विशाल राणा, डॉ. मनीष कुमार, डॉ. नारायण सिंह, डॉ. केके रैना, डॉ. मनीषा ठाकुर, डॉ. अंजलि चौहान, डॉ.अनुपमा सिंह और डॉ. नरेंद्र भरत। डॉ.अनिल सूद और डॉ. मीनू सूद पहले ही एआईटी, थाईलैंड में दो सप्ताह का अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम कर चुके हैं और वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया में डॉ. राकेश शर्मा अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। अगले सप्ताह ऑस्ट्रेलिया, कोरिया और इजराइल के लिए रवाना होंगे कुछ वैज्ञानिक।

मुख्यमंत्री ने हिमाचल के लिए 5जी सेवा का शुभारंभ किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने हिमाचल प्रदेश में जियो कंपनी की 5जी सेवा का शुभारंभ किया। उन्होंने जियो और प्रदेशवासियों को 5जी सेवा शुरू होने की शुभकामनाएं भी दी। उन्होंने कहा कि यह सेवा संचार के क्षेत्र में प्रदेश के लिए मील पत्थर साबित होगी क्योंकि वर्तमान में प्रदेश का हर तीसरा व्यक्ति इंटरनेट सेवा का उपयोग कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 5जी सेवा का विस्तार प्रदेश की संचार अधोसंरचना को सुदृढ़ करेगा। इससे विशेषकर विद्यार्थियों, उद्यमियों व पेशेवरों को बेहतर संचार सुविधा उपलब्ध होगी और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में अधिकाधिक अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने कहा कि पूर्व केंद्रीय दूरसंचार मंत्री पंडित सुखराम जी के समय में शुरू की गई लैंडलाईन सेवाओं के पश्चात दूरसंचार क्षेत्र में 2जी सेवा से लेकर अब तक अभूतपूर्व परिवर्तन आये हैं।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार की पर्यटन, स्वास्थ्य, बागवानी, कृषि और शिक्षा क्षेत्र से संबंधित फ्लैगशिप परियोजनाओं को गति प्रदान करने में 5जी तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। दूरसंचार क्षेत्र में आयी क्रांति स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए राज्य के स्वास्थ्य संस्थानों तथा सभी छः चिकित्सा महाविद्यालय में विश्व स्तरीय तकनीक शुरू करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार सरकार शिक्षा क्षेत्र में भी आवश्यक परिवर्तन कर रही है। अगले शैक्षणिक स्तर से तकनीकी शैक्षणिक संस्थानों में रोबोटिक्स, ब्लॉक चेन तकनीक, साइबर सिक्योरिटी, क्लाउड कंप्यूटिंग-डाटा साईंस, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग जैसे पाठयक्रम आरंभ किए जाएंगे जिससे युवाओं को रोजगार के अनेक अवसर सृजित होंगे। इसके कार्यान्वयन के लिए प्रदेश सरकार ने 20 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की है।

कोरोना महामारी के दौरान इंटरनेट सेवाओं ने विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में नये अनुभव प्रदान किये तथा उनकी सीखने की क्षमताओं को भी बढ़ाया। वर्तमान में ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का अभिन्न अंग बन गया है।

मुख्यमंत्री ने कंपनी को जिला मुख्यालय स्तर पर भी 5जी अधोसंरचना सुदृढ़ करने के लिये कहा ताकि लोगों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

इससे पहले, जियो कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (नॉर्थ इंडिया) कपिल आहूजा ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और अवगत करवाया कि कंपनी प्रथम चरण में शिमला, हमीरपुर, बिलासपुर और नादौन क्षेत्र के उपभोक्ताओं को 5जी सेवाएं और इस वर्ष के अंत तक अन्य शहरों में भी 5जी सेवाएं उपलब्ध करवायेगी।

लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार सुनील शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार सूचना प्रौद्योगिकी एवं नवाचार गोकुल बुटेल, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (मीडिया) नरेश चैहान, उपायुक्त आदित्य नेगी, पुलिस अधीक्षक संजीव गांधी और रिलायंस जियो के वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्लास्टिक उत्पादकों, आयातकों, ब्रांड मालिकों और अपशिष्ट संसाधकों को ईपीआर पोर्टल पर पंजीकरण अनिवार्य

शिमला/शैल। प्रदेश में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन की समीक्षा के लिये हिमाचल प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष संजय गुप्ता की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा अधिसूचित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन (संशोधन) नियम, 2022 के प्रावधानों पर व्यापक चर्चा की गयी। इन संशोधनों का मुख्य उद्देश्य प्लास्टिक पैकेजिंग अपशिष्ट का समुचित प्रबंधन करना है जो कि हाल ही के वर्षों से पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है।

बैठक में अवगत करवाया गया कि केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्लास्टिक उत्पादकों, आयातकों और ब्रांड मालिकों तथा अपशिष्ट संसाधकों के लिए विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) पोर्टल विकसित किया गया है। इन सभी को इस पोर्टल पर पंजीकरण करवाना आवश्यक है। पंजीकरण के दौरान प्लास्टिक उत्पादों की मात्रा, आयात अथवा बेचे गये उत्पादों का ब्यौरा तथा इसके प्रबंधन के लिये उठाये गये कदमों की जानकारी देनी होगी। प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के लिए आधारभूत ढांचा उपलब्ध करवाने के अतिरिक्त इन अपशिष्टों के एकत्रीकरण, पृथक्करण, पुनःचक्रण, पुनः उपयोग और निस्तारण का लक्ष्य भी इन्हें प्राप्त करना होगा। प्लास्टिक अपशिष्ट संसाधकों को प्रत्येक वित्त वर्ष में 30 अप्रैल तक श्रेणीवार इस बारे में अपना वार्षिक विवरण प्रस्तुत करना होगा।

उत्पादकों, आयातकों और ब्रांड मालिकों को प्लास्टिक पैकेजिंग अपशिष्ट एकत्रीकरण और इसके संसाधन के बारे में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड अथवा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड या प्रदूषण नियंत्रण समिति के समक्ष प्रत्येक वित्तीय वर्ष में 30 जून तक निर्धारित प्रपत्र पर वार्षिक विवरण देना होगा। ईपीआर लक्ष्यों का प्रयोजन प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन में उत्पादकों, आयातकों और ब्रांड मालिकों की और सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।

बैठक में बताया गया कि प्रदेश में प्लास्टिक उत्पादकों, आयातकों और ब्रांड मालिकों व पुनःचक्रकों को मिलाकर लगभग 800 प्लास्टिक अपशिष्ट पैकेजिंग इकाइयां क्रियाशील हैं और इनमें से अभी केवल 84 इकाइयों ने ही ईपीआर पोर्टल पर पंजीकरण के लिए आवेदन किया है।

राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष ने सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि शेष इकाइयों को भी निर्धारित मानकों के अनुसार ईपीआर पोर्टल पर पंजीकृत करना सुनिश्चित करवायें। इसके लिए सभी इकाइयों को गत चार फरवरी को ही आवश्यक निर्देश जारी किये जा चुके हैं।

उत्पादकों, आयातकों और ब्रांड मालिकों को प्लास्टिक पैकेजिंग अपशिष्टों के एकत्रीकरण, पृथक्करण और संसाधकों तक इन अपशिष्टों के परिवहन तथा प्लास्टिक अपशिष्टों के निस्तारण और क्रय के लिये अनुबंध इत्यादि की भी जानकारी देनी होगी। यदि यह अपशिष्ट राज्य से बाहर संसाधकों को भेजे जाते हैं, तो एकत्रीकरण ढांचे और परिवहन का ब्यौरा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को देना होगा।

दूरदर्शन के डीडी हिमाचल चैनल की 24 घंटे प्रसारण सेवाओं का शुभारंभ

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू तथा केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने पीटरहॉफ शिमला से दूरदर्शन के डीडी हिमाचल चैनल की 24 घंटे प्रसारण सेवाओं का शुभारंभ किया।

अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने लगभग 70 लाख आबादी वाले हिमाचल प्रदेश को 24 घंटे डीडी हिमाचल प्रसारण के लिये केंद्रीय मंत्री का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार में हिमाचल प्रदेश से संबंध रखने वाले मंत्री हैं, इसलिये यह सेवा शुरू हो पायी है। उन्होंने कहा कि दूरदर्शन के राष्ट्रीय प्रसारण की शुरुआत पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने की थी तथा समय के साथ-साथ दूरदर्शन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन आये।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार राज्य को विकास की ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है, जिसके लिये केंद्र सरकार का सहयोग आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार दलगत राजनीति में विश्वास नहीं करती और केंद्र सरकार के साथ मिलकर प्रदेशवासियों को जन-सुविधाएं प्रदान करने और राज्य के विकास के लिए काम करेगी। केंद्र व प्रदेश की योजनाओं को आम आदमी तक पहुंचा कर उन्हें अधिक से अधिक लाभ देने का प्रयास किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश की खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए खेलों का आधारभूत ढांचा मजबूत करने की आवश्यकता है, जिसके लिये केंद्रीय

खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर का सहयोग अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि केंद्र की अन्य योजनाओं में भी हिमाचल प्रदेश को उसका हक मिलना चाहिए। हिमाचल प्रदेश की आर्थिकी पर्यटन पर निर्भर करती है तथा डीडी हिमाचल पर पर्यटन संबंधी गतिविधियों पर आधारित कार्यक्रमों से इस क्षेत्र को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पर्यटन बढ़ेगा तो इससे रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं तथा राज्य सरकार ने इनके दोहन के लिए अनेक योजनाएं आरम्भ की हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए आधारभूत अधोसंरचना सृजित की जा रही है ताकि यहां पर उनकी यात्रा आरामदायक एवं सुविधाजनक हो।

मुख्यमंत्री ने प्रसार भारती प्राधिकरण से आग्रह कि वे हिमाचल प्रदेश की समृद्ध पर्यटन क्षमता को देश व विदेश में प्रसारित करें ताकि अधिक से अधिक पर्यटक यहां भ्रमण पर आयें। इससे न केवल प्रदेश के लोगों की आय में वृद्धि होगी, बल्कि उन्हें प्रदेश की खूबसूरत वादियों से रूबरू होने का सुअवसर प्राप्त होगा।

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री, युवा कार्य तथा खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू का कार्यक्रम में पधारने पर स्वागत किया और प्रदेशवासियों को डीडी हिमाचल की सेवाएं चौबीस घंटे उपलब्ध होने पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह हिमाचल के लिये ऐतिहासिक दिन है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य में दूरदर्शन चैनल का 24 घंटे प्रसारण शुरू हो रहा है। उन्होंने कहा कि इसमें आधुनिक उपकरण लगाये गये हैं। डीडी हिमाचल डीटीएच पर भी उपलब्ध होगा, जिसके माध्यम से प्रदेश की कला, संस्कृति, साहित्य, पर्यटन व धार्मिक स्थलों, खेल गतिविधियों तथा विभिन्न उपलब्धियों से संबंधित जानकारी देश और दुनिया तक पहुंचेंगी। उन्होंने कहा कि इस चैनल के माध्यम से हिमाचल प्रदेश में पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा और इसके लिए राज्य के पर्यटन विभाग के साथ मिलकर काम किया जायेगा। साथ ही, हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत को भी एक बेहतरीन मंच प्राप्त होगा, जिसके लिए दूरदर्शन के प्रसिद्ध कार्यक्रम चित्रहार की तर्ज पर हिमाचली संगीत पर कार्यक्रम प्रसारित किया जाये।

अनुराग सिंह ठाकुर ने कहा कि इस चैनल के माध्यम से देश की आजादी में भूमिका निभाने वाले देवभूमि के स्वतंत्रता सेनानियों तथा सेना में सेवाएं देने वाले वीर सैनिकों के साहस की शौर्य गाथाएं भी प्रस्तुत की जायेंगी। उन्होंने कहा कि डीडी हिमाचल पर आधे-आधे घंटे के तीन समाचार बुलेटिन प्रसारित किये जायेंगे। इसके अलावा प्रदेश में होने वाली विभिन्न गतिविधियों का इवेंट के रूप में लाइव प्रसारण किया जायेगा तथा हिमाचल प्रदेश से जुड़ी सभी जानकारियां डीडी हिमाचल पर उपलब्ध होंगी।

सांसद सुरेश कश्यप ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि डीडी हिमाचल का प्रसारण चौबीस घंटे होने से लोगों को बेहतरीन कार्यक्रम देखने को मिलेंगे और पूरी दुनिया को भी प्रदेश की समृद्ध संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

इससे पहले, केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री ने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू को सम्मानित किया। प्रसार भारती के सीईओ गौरव द्विवेदी ने सभी अतिथियों का कार्यक्रम में पधारने पर स्वागत किया।

इस अवसर पर उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, कृषि मंत्री चंद्र कुमार, राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी, शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह, लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह, मुख्य संसदीय सचिव संजय अवस्थी, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार सुनील शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (मीडिया) नरेश चौहान, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (आईटी) गोकुल बुटेल, मुख्यमंत्री के ओएसडी गोपाल शर्मा, विधायकगण, दूरदर्शन के वरिष्ठ अधिकारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

प्रदेश सरकार पर्यावरण संरक्षण और विकास में संतुलन बनाए रखने के लिए प्रतिबद्धः मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने राज्य में विकास परियोजनाओं के लिए वन संरक्षण अधिनियम (एफसीए) और वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) के तहत स्वीकृतियों में देरी पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार इस विषय को केंद्र सरकार के समक्ष उठाएगी ताकि विभिन्न विकास परियोजनाओं को समय पर पूरा किया जा सके।

यह बात मुख्यमंत्री ने वन विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुये कही। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार

विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि राज्य के लोगों के लिये महत्वपूर्ण विकास परियोजनाएं जैसे हेलीपोर्ट, इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन और डे बोर्डिंग स्कूल इत्यादि एफसीए एवं एफआरए अनुमोदन में देरी के कारण लंबित हो रही हैं। उन्होंने वन अधिकारियों को एफसीए व एफआरए स्वीकृतियों के मामलों में तेजी लाने के निर्देश दिये और कहा कि इस मामले में उनकी जवाबदेही भी तय की जाएगी।

इससे पहले, मुख्यमंत्री ने हिमाचल प्रदेश राज्य वन्य जीव बोर्ड की 11वीं बैठक की अध्यक्षता की।

मुख्यमंत्री ने विभाग को पौंग बांध जलाशय में जलक्रीड़ा और हॉट एयर बैलून संचालन जैसी पर्यटन गतिविधियां आरंभ करने की संभावनाओं का पता लगाने के निर्देश दिए ताकि अधिक से अधिक पर्यटक कांगड़ा घाटी की ओर आकर्षित हो सकें, इससे स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने में काफी मदद प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि इसके दृष्टिगत धमेटा रेंज में मथियाल और कठरा खास, नगरोटा सूरियां रेंज में नंगल चैक आदि स्थानों की पहचान की गई है। उन्होंने कहा कि वन विभाग और पर्यटन विभाग इस मामले को आगे बढ़ाने के लिए समन्वय के साथ कार्य करेंगे ताकि रोजगार के अधिक से अधिक अवसर सृजित किये जा सकें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार कांगड़ा जिला को राज्य की पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित करने के दृष्टिगत कार्य कर रही है। इस क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों के लिए बेहतरीन बुनियादी ढांचा विकसित किया जायेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जलाशय में तैराकी, क्याकिंग, कैनोइंग, राफ्टिंग और गोताखोरी आदि साहसिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पर्यटन एजेंसियों को कृषि और अन्य गतिविधियों में शामिल समुदायों को आजीविका अर्जन के लिए पर्यटन आधारित गतिविधियों में शामिल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वन्य जीवों के संरक्षण के लिए कई योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। उन्होंने लोगों से भी इस दिशा में राज्य सरकार के प्रयासों में सहयोग करने का आग्रह किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने वन विभाग का वार्षिक कलैण्डर भी जारी किया। प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन बल प्रमुख) वीके तिवारी और प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन्यजीव) राजीव कुमार ने विभाग की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। बैठक में एपीसीसीएफ (वन्यजीव) अनिल ठाकुर ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और सीसीएफ (वन्यजीव) उपासना पटियाल ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

मुख्य संसदीय सचिव सुंदर सिंह ठाकुर और संजय अवस्थी, विधायक भवानी सिंह पठानिया, प्रधान सचिव, वन, ओंकार शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव भरत खेड़ा, प्रधान सचिव, शहरी विकास, देवेश कुमार, निदेशक पर्यटन अमित कश्यप और वन विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित उपस्थित थे।

ब्रिटिश उच्चायोग के प्रतिनिधिमंडल से सुझाव प्रदान करने का आग्रहःमुख्यमंत्री

शिमला/शैल। ब्रिटिश उच्चायोग में जलवायु परिवर्तन नीति की प्रमुख एरीना कोसेक के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू से भेंट की।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश वर्ष 2025 तक हरित ऊर्जा राज्य बनने की ओर अग्रसर है तथा इस लक्ष्य को प्राप्त करने में इलेक्ट्रिक वाहन संचालन मुख्य भूमिका

निभायेगा। उन्होंने कहा कि इंडिया-यूके पैक्ट के तहत शिमला शहर में करवाये गये सर्वेक्षण के निष्कर्ष शिमला को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने में सहायक सिद्ध होंगे। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को इस विषय पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान करने का आग्रह किया।

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने इस अवसर पर अपने बहुमूल्य सुझाव साझा किये।

एरिना कोसेक ने कहा कि इंडिया-यूके पैक्ट के तहत शिमला शहर में इलेक्ट्रिक वाहन संचालन, बहुस्तरीय परिवहन तथा रज्जूमार्ग इत्यादि पर मूल सर्वेक्षण करवाया गया है।

इंडिया-यूके पैक्ट के तहत राज्य तथा शहर स्तर पर सार्वजनिक परिवहन को इलेक्ट्रिक वाहन संचालित बनाने के उद्देश्य से नीति तथा संस्थागत कमियों को चिन्हित करने के लिए रिसर्च ट्राइएंगल इन्स्टीच्यूट को वित्तपोषित किया जाता है।

मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (सूचना प्रौद्योगिकी एवं नवाचार) गोकुल बुटेल, प्रधान सचिव परिवहन आर.डी. नज़ीम, हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक संदीप कुमार, निदेशक परिवहन अनुपम कश्यप, ब्रिटिश उच्चायोग में आर्थिकी, जलवायु तथा विकास की वरिष्ठ सलाहकार मधु मिश्रा, निदेशक ऊर्जा तथा आरई आईसीएफ सुष्मिता अजवानी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

इससे पूर्व, प्रतिनिधिमंडल ने परिवहन विभाग, स्मार्ट सिटी परियोजना, नगर निगम, रोपवे कार्पोरेशन तथा हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड के अधिकारियों के साथ विमर्श किया।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाषः 0177-2805015, 94180-15015 फैक्सः 2805015

नादौन भाजपा मण्डल में पार्टी विरोधी गतिविधियों में दस के खिलाफ कारवाई

- क्या प्रदेश स्तर तक जायेगी यह शुरुआत
- इसी दौरान एच.पी.सी.ए. स्टेडियम धर्मशाला में भारत – आस्ट्रेलिया मैच हुआ इन्दौर शिफ्ट
- मैच शिफ्ट होना कुप्रबंधन या राजनीति उठी चर्चा

शिमला/शैल। नादौन भाजपा मण्डल ने विधानसभा चुनाव में पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिये आठ नेताओं को छः वर्ष के लिये निष्कासित कर दिया है और दो को नोटिस जारी किया है। स्मरणीय है कि नादौन विधानसभा क्षेत्र से मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू जीत कर आये हैं। इनके खिलाफ भाजपा ने पूर्व विधायक विजय अग्निहोत्री को टिकट देकर मैदान में उतारा था। अग्निहोत्री के लिये नादौन में केंद्रीय गृह मन्त्री अमित शाह ने भी चुनावी सभा को संबोधित किया था। नादौन में भाजपा के हार के बाद यहां के मण्डल का एक पत्र वायरल हुआ था जिसमें भाजपा प्रत्याशी की हार के लिये राज्यसभा सांसद डॉ. सिकन्दर को जिम्मेदार ठहराया गया था। आरोप था कि उन्हें कुछ चुनावी सभाओं के लिये आमंत्रित किया गया था और वह नहीं आये थे। डॉ. सिकन्दर भी नादौन क्षेत्र से ही ताल्लुक रखते हैं। यह भी कहा गया था कि वह केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री अनुराग ठाकुर के निकट स्थित है। हमीरपुर जिला से भाजपा पाचों सीटें हार गयी हैं बल्कि हमीरपुर संसदीय क्षेत्र की सत्रह विधानसभा सीटों में से केवल पांच पर ही भाजपा को सफलता मिली है जबकि इसी क्षेत्र से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा भी ताल्लुक रखते हैं। विजय अग्निहोत्री पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के विश्वस्त माने जाते हैं। जयराम ठाकुर और प्रो. प्रेम कुमार धूमल के राजनीतिक रिश्ते बहुत अच्छे नहीं रहे हैं यह प्रदेश की राजनीति की समझ रखने वाला हर आदमी जानता है। यह भी सब जानते हैं कि जयराम के कार्यकाल में जब भी नेतृत्व परिवर्तन के सवाल परोक्ष/अपरोक्ष में उठे हैं तो उन पर नड्डा ने ही हर बार विराम लगाया है।

इस परिदृश्य में जब भाजपा प्रदेश विधानसभा का चुनाव हार गयी है और केन्द्र सरकार तथा नरेंद्र मोदी पर अदानी का ग्रहण लगातार फैलता जा रहा है तब 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव कोई आसान खेल नहीं रह जाएगा यह शायद भाजपा कार्यकर्ताओं को भी समझ आने लगा है। 2024 के चुनाव में हमीरपुर संसदीय क्षेत्र से अनुराग ठाकुर ही भाजपा के उम्मीदवार होंगे। लेकिन इसी संसदीय क्षेत्र से मुख्यमंत्री सुक्खू और उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री भी ताल्लुक रखते हैं और कांग्रेस ने इसी क्षेत्र से बारह सीटों पर विजय हासिल की है। इस व्यवहारिक गणित को सामने रखते हुये आज भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिये यह सीट न केवल प्रतिष्ठा का ही प्रसन्न होगी बल्कि कांग्रेस नेतृत्व के लिये व्यक्तिगत प्रश्न बन जायेगी। ऐसे में जब भाजपा नादौन मंण्डल में पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिये मण्डल स्तर के नेताओं के खिलाफ कारवाई की बात करेगी तो निश्चित है कि यही लाइन अन्य क्षेत्रों में भी बढ़ेगी। यह सवाल उठेगा कि ऐसे फैसलों से क्या पार्टी सशक्त होगी या बिखराव की तरफ बढ़ेगी। अभी अनुराग ठाकुर ने शिमला दूरदर्शन में 24X 7 सेवाएं शुरु करवाकर अपने मंत्रालय से प्रदेश को कुछ दिया है जिससे प्रदेश की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनेगी।

लेकिन इसी दौरान एचपीसीए के धर्मशाला स्टेडियम से भारत – ऑस्ट्रेलिया गावस्कर सीरीज का मैच इन्दौर शिफ्ट हो जाना एक अलग प्रकरण बयान कर देता है। यह मैच शिफ्ट होने का कारण कुप्रबंधन और राजनीति कहीं जा रही है। कारण जो भी रहा हो लेकिन इसका असर भाजपा की आन्तरिक राजनीति और प्रदेश सरकार के साथ रिश्तो पर भी पड़ेगा यह तय है। क्योंकि इस समय भाजपा की खेमेबाजी न चाहते हुये भी सामने आती जा रही है। जयराम, अनुराग और नड्डा प्रदेश के तीन खेमे सामने आ चुके हैं। विधानसभा चुनावों में हार के बाद भी नड्डा को एक वर्ष का विस्तार मिल गया है और जयराम नेता प्रतिपक्ष बन गये। लेकिन प्रदेश के संगठन में सारी चर्चाओं के बावजूद कोई बदलाव नहीं आ पाया है। ऐसे में नादौन के घटनाक्रम को एक बड़े संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

जब शिवधाम परियोजना के लिये बजट प्रावधान ही नहीं था तो फिर इस पर करोड़ों का खर्च कैसे हो गया

- 40 करोड की टैण्डर वैल्यू पर बीस हजार की ई.एम.डी. कैसे
- विजिलैन्स के पत्र पर पर्यटन निगम में कारवाई क्यों नहीं
- जब मण्डी को छोटी काशी की उपमा हासिल है तो फिर शिवधाम का औचित्य क्या है

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने मण्डी में शिवरात्रि आयोजन के अवसर पर परिधिगृह में आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लेते हुये यह कहा है कि पूर्व सरकार ने शिवधाम और मण्डी हवाई अड्डे के लिये बजट का कोई प्रावधान नही किया था। लेकिन वर्तमान सरकार पूर्व सरकार की सभी महत्वपूर्ण परियोजनाओं को पूरा करेगी। जनकल्याण से जुड़ी हर परियोजना को पूरा करना हर सरकार की नैतिक जिम्मेदारी होती है। लेकिन यह जिम्मेदारी निभाने के लिये धन का प्रावधान और आवश्यकता की प्राथमिकता देखना भी सरकार का ही दायित्व होता है। मण्डी को छोटी काशी भी कहा जाता है। मण्डी में भूतनाथ मन्दिर से लेकर पंचवक्र महादेव तक कई शिव मन्दिर स्थापित है। माता के भी कई मन्दिर विद्यमान है। इन सारे मन्दिरों की एक जैसी देखभाल भी शायद प्रशासन के लिये कर पाना संभव नहीं है। ऐसे में जिस नगर को छोटी काशी की उपमा हासिल हो वहां पर नगर से कुछ दूर एक पहाड़ी पर भगवान शिव के द्वादिश लिंगों की स्थापना करके एक शिव धाम बसाना और वह भी तब जब प्रदेश कर्ज के सहारे चल रहा हो तो उसके औचित्य तथा सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल उठेंगे ही।

मण्डी की सांसद और प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्षा प्रतिभा वीरभद्र सिंह ने भी शिवधाम की आवश्यकता और औचित्य पर एक साक्षात्कार में सवाल उठाये हैं। अब जब मुख्यमंत्री सार्वजनिक मंच से यह खुलासा कर रहे हैं कि शिवधाम परियोजना बिना बजट के ही शुरू कर दी गई थी तो क्या इस पर अब तक हुआ करोड़ों का खर्च भ्रष्टाचार की संज्ञा में नहीं आ जाता है? इसी परियोजना के टैन्डर में यह सामने आ चुका है कि चालीस करोड़ के टैन्डर में केवल बीस हजार रूपये ही ई.एम.डी. के रूप में लिये गये हैं। जबकि सरकार के वित्तीय नियमों के अनुसार यह ई.एम.डी. कम से कम दो प्रतिशत होनी चाहिये थी। चालीस करोड़ की टैन्डर वैल्यू पर यह राशि 80 लाख बनती है। शैल ने जब यह खबर उठाई थी तो जयराम का पूरा प्रशासन शैल की आवाज दबाने के प्रयासों में लग गया था। शैल ने इस ई.एम.डी. को लेकर विजिलैन्स को भी रिकार्ड पर शिकायत की है। विजिलैन्स ने सारे दस्तावेजी प्रमाण देखने के बाद यह मामला पर्यटन निगम को कारवाई के लिये भेज दिया था। लेकिन आज तक इस पर कोई कारवाई न होना कई सवाल खड़े कर देता है।

ऐसे में जब यह परियोजना बिना बजट प्रावधान के शुरू कर दी गयी है और इस पर करोड़ों खर्च हो गये हैं तो निश्चित रूप से यह सीधे भ्रष्टाचार का मामला बनता है। जब प्रदेश के हालात श्रीलंका जैसे होने की संभावना बनी हुई है तब तो ऐसे मामलों की जांच किया जाना और भी आवश्यक हो जाता है। क्योंकि शिवधाम और मण्डी हवाई अड्डे में से हवाई अड्डे को प्राथमिकता देना तो जनहित के दायरे में आ जाता है लेकिन शिवधाम नहीं आता है। बिना बजट के करोड़ों का खर्च कर दिये जाने के लिये क्या संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कारवाई नहीं की जानी चाहिये। क्योंकि अब तो शिवधाम का काम कर रहे ठेकेदार द्वारा भी काम छोड़ दिये जाने की चर्चा है।

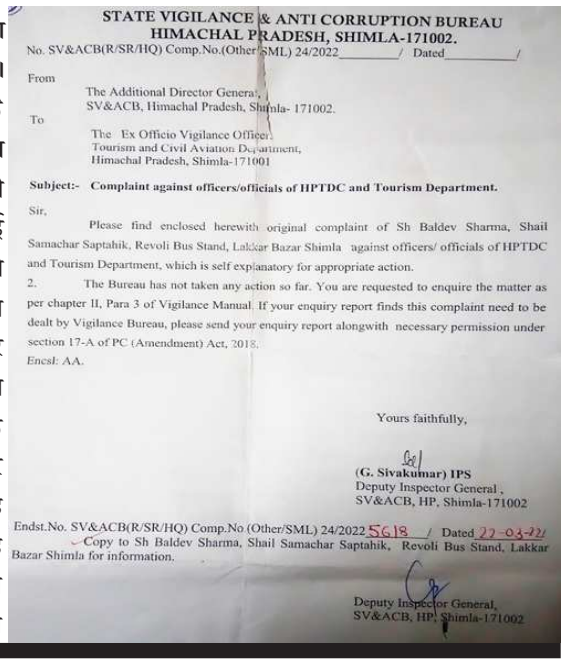

STATE VIGILANCE & ANTI CORRUPTION BUREAU
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171002.

No. SV&ACB(R/SR/HQ) Comp.No.(Other/SML) 24/2022_____/ Dated_____/

From
The Additional Director General,
SV&ACB, Himachal Pradesh, Shimla- 171002.

To
The Ex Officio Vigilance Officer,
Tourism and Civil Aviation Department,
Himachal Pradesh, Shimla-171001

Subject:- Complaint against officers/officials of HPTDC and Tourism Department.

Sir,

Please find enclosed herewith original complaint of Sh Baldev Sharma, Shail Samachar Saptahik, Revoli Bus Stand, Lakkar Bazar Shimla against officers/ officials of HPTDC and Tourism Department, which is self explanatory for appropriate action.

2. The Bureau has not taken any action so far. You are requested to enquire the matter as per chapter II, Para 3 of Vigilance Manual. If your enquiry report finds this complaint need to be dealt by Vigilance Bureau, please send your enquiry report alongwith necessary permission under section 17-A of PC (Amendment) Act, 2018.

Encsl: AA.

Yours faithfully,

(G. Sivakumar) IPS
Deputy Inspector General,
SV&ACB, HP, Shimla-171002

Endst.No. SV&ACB(R/SR/HQ) Comp.No (Other/SML) 24/2022 5618 / Dated 22-03-22/
Copy to Sh Baldev Sharma, Shail Samachar Saptahik, Revoli Bus Stand, Lakkar Bazar Shimla for information.

Deputy Inspector General,
SV&ACB, HP, Shimla-171002